B.A. (Hons)
Paper - I
Unit - I

Topic - Case study Method

केस अध्ययन विधि

केस अध्ययन विधि के कुछ गुण तथा अवगुण है जो निम्नांकित है —

गुण (Merits)

(i) केस अध्ययन विधि में मनोवैज्ञानिक चूँकि प्रत्येक अध्ययन किये जाने वाले व्यक्ति का एक अलग विस्तृत इतिहास तैयार करके उसके कारणों का पता लगाते हैं, इसलिए इस विधि द्वारा व्यक्ति का गहन अध्ययन सम्भव है।

(ii) नैदानिक विधि द्वारा व्यक्ति के मानसिक तथा शारीरिक विकासक्रम को अच्छी तरह जाँचा जा सकता है। इस विधि द्वारा अध्ययन करने में मनोवैज्ञानिकों को इस बात की भरपूर जानकारी हो जाती है कि व्यक्ति किन-किन वैयक्तिक अवस्थाओं से गुजर चुका है तथा उनका प्रभाव उनके शारीरिक एवं मानसिक मानसिक विकास पर क्या पड़ा है।

(iii) नैदानिक विधि में चूँकि अध्ययन का आधार केस विवरण होता है, अतः इस विधि में व्यक्ति की समस्याओं एवं उनके सम्भावित कारणों पर सीधा प्रकाश डालने का सुनहरा अवसर मनोवैज्ञानिकों को प्राप्त होता है।

अवगुण (Demerits)

इन गुणों के बावजूद इस विधि के प्रमुख अवगुण है जिनमें निम्नांकित प्रमुख है —

(i) नैदानिक विधि में व्यवहार के अध्ययन का आधार व्यक्ति का गत इतिहास होता है जो व्यक्ति के माता-पिता, दोस्त तथा पड़ोसियों द्वारा दिये गये सूचनाओं पर आधारित होता है। अक्सर देखा गया है कि माता-पिता, दोस्त या पड़ोसी व्यक्ति की सच्ची घटनाओं या तथ्यों को विशेषकर वैसी घटनाओं या तथ्यों को जिनका संबंध नैतिकता से होता है, छिपा लेते हैं।

फलस्वरूप, उनके द्वारा प्रदत्त सूचनाएँ दोषपूर्ण हो जाती है और उनके आधार पर जो अध्ययन किया जाता है, वह अधिक निर्भर योग्य नहीं रह जाता है।

(ii) व्यक्ति के बारे में पूर्ण विवरण तैयार करने में जो सूचनाएँ प्राप्त होती है या जो इतिहास तैयार होता है, उसकी सत्यता की जाँच करने का कोई उपयुक्त तरीका नैदानिक विधि में नहीं है।

(iii) नैदानिक विधि द्वारा व्यक्ति की समस्या का अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक है कि मनोवैज्ञानिक काफी प्रशिक्षित हो तथा उन्हें साक्षात्कार तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का उत्तम ज्ञान हो। प्रायः देखा गया है कि इस विधि का उपयोग एक साधारण मनोवैज्ञानिक भी करने लगते हैं। ऐसी परिस्थिति में इनसे प्राप्त तथ्यों पर अधिक भरोसा नहीं किया जा सकता है।

उपयुक्त अवगुणों के बावजूद नैदानिक विधि का उपयोग मनोविज्ञान में विशेषकर केस अध्ययन या नैदानिक मनोविज्ञान में काफी अधिक होता है। मात्र यही एक ऐसी विधि है जिसके माध्यम से व्यक्ति के व्यवहारात्मक समस्याओं का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से की जा सकती है।